समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक
प्रो. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

ले-आउट
स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,
नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/-रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakshan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो 7
विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन 11
डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य 15
अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि 18
डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' 20
अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका 23
डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष 27
अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय 30
डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ 34
डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण 37
भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप 40
डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक 43
गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध 45
डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध 47
गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण 50
गोविन्द नैनीवाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

भारत में जलवायु परिवर्तन एवं सरकारी नीतियां 54
हंसा मीना

बेटी उपन्यास में बेटी की गौरव गाथा 57
डॉ. कमलेश कुमारी

रामवृक्ष बेनीपुरी के गद्य साहित्य की भाषा 59
डॉ. करतार सिंह

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त 62
डा. राम किंकर पाण्डेय

सोहन लाल 'रामरंग' विरचित 'उत्तर साकेत' महाकाव्य में रस-निरूपण 65
डॉ. मधु शर्मा

सिनेमा में कैमरे की भाषा 69
महेश सिंह

महिला सशक्तिकरण 72
डॉ. मंजू ठाकुर

भाषा विमर्श और गाँधी 74
प्रभंजन कुमार झा

आधुनिकता और समकालीनता का अंतर्संबंध 76
डॉ. प्रवेश कुमार

राजस्थान में पुलिस मित्र योजना : एक अवलोकन 80
राहुल वर्मा

असहमति की दृढ़ता और ख़ामोशियों का शिल्पकार : निर्मल वर्मा 82
निर्मल वर्मा/डॉ. रामेश्वर राय

उम्मीद बनी रहेगी तब तक... 84
रश्मि नरताम

भारतीय बोलियों की उपेक्षा, भाषा का मानकीकरण और राजनीति 88
डा. रिम्पी खिल्लन सिंह

केदारनाथ सिंह के काव्य में प्रकृति 91
डॉ. रूपेश कुमार

सुषम बेदी के उपन्यास में स्त्री-मन की पीड़ा ('मैंने नाता तोड़ा' के विशेष संदर्भ में) 94
संगीता यादव

आंचलिकता का प्रतिनिधि उपन्यास 'मैला आँचल' : एक विश्लेषण 96
डॉ. श्रुति शर्मा

अफगानिस्तान की परिवर्तित स्थिति का भारत पर प्रभाव 98
डॉ.सोनाली सिंह

हिंदी, उर्दू एवं पंजाबी कहानियों में भारत विभाजन की त्रासदी: एक अध्ययन 103
सुकांत सुमन

उपनिषदों में सष्ट्युत्पत्ति विद्या 107
डॉ. उमा शर्मा

'रेणु की 'कहानी' और राजनीति' 110
विजय यादव

निराला की लम्बी कविताओं की शिल्पगत विशेषताएं 112
डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह

'पहला राजा' : मिथक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ 117
डॉ. विपुल कुमार

तीसरी सत्ता की मार्मिक दास्तान : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा 120
डॉ. यशपाल सिंह राठौड़

महिलाओं के घरेलू कार्यों का राष्ट्रीय विकास में योगदान: आर्थिक पहचान का नया दौर 124
डा. सुनीता पारीक

भक्तिकालीन संतो का साहित्यिक योगदान 127
डॉ. अनिता वेताल

भारत में समावेशी शिक्षा : एक विवेचनात्मक अध्ययन 130
नीति/डॉ प्रतिभा रानी सिंह

अज्ञेय की प्रयोगशील कविता 133
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप और उद्देश्य: एक संक्षिप्त अवलोकन 136
राहुल कुमार झा

वैकल्पिक महिला आरक्षण विधेयक 138
डॉ. स्वाति कुमारी

प्रभा खेतान लिखित उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में स्त्री विमर्श 140
डॉ. सरोज पाटील

नई शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण 143
डा. कालिंदी लालचंदानी

डॉ. शाहनाज मेहमुदशा सय्यद 145
शहनाज़ सय्यद

भारत में संविधान के नीति-निदेशक तत्व एवं सम्पोषणीय विकास 148
डा. अशोक कुमार/डॉ. राजीव सागर

आहत मुद्राओं के मूल्यवर्ग एवं बाजार मूल्य तथा उनका पारस्परिक संबंध 151
प्रीति सिंह

समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन संघर्ष ('धरती धन न अपना' के वि ोष संदर्भ में) 154
डॉ. नवनाथ गाडेकर

कोच्ची मुज़िरिस बिएन्नाले में प्रदर्शित कुछ प्रमुख इंस्टालेशन आर्ट: चतुर्थ संस्करण के विशेष संदर्भ में 156
शिखा सोनकर

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकियों में सामाजिक यथार्थ एवं कलात्मकता 160
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

क्षेत्रवाद, राजनीतिक अपराधीकरण, साम्प्रदायिकता और जातिवाद का प्रभाव 163
नीशू

दिल्ली सल्तनत की कानूनी व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन 166
डॉ. रिनी पुण्डीर

शिक्षा का समावेशीकरण : एक अध्ययन 169
डा.अलका सक्सेना

जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराएं : प्रासंगिकता एवं संभावनाएं 171
डा. नरेश सिंह

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में ''बरेली के मुंशी शोभाराम और खान बहादुर खाँ का योगदान'' 173
कुलदीप गंगवार

हिंदी नाटक में गांधीवाद की अभिव्यक्ति (विशेष संदर्भ-प्रसादोत्तर नाटक) 176
डा. अवधेश कुमार

भारत में महिला शिक्षा एवं इसका महत्त्व 179
बबिता खाती

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानवीय संवेदना का शैक्षणिक पक्ष 182
अनिल कुमार

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में रूस की स्थिति: एक राजनीतिक विश्लेषण 185
शैलेन्द्र कुमार

शैक्षिक प्रगति और राजनीतिक विमुखता 188
डॉ. संदीप कुमार अत्री

शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों में सामाजिक समावेशन का अध्ययन 190
अखिलेश कुमार पटेल/डॉ. यतीन्द्र मिश्रा

'परख' उपन्यास के नारी पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 193
सिमरन भारती

वर्तमान युग में तथागत गौतम बुद्ध के विचारों की उपादेयता 195
डॉ. माया शंकर

वैश्विक मंच पर बढ़ता हिन्दी भाषा का प्रभाव 198
डॉ. शशांक कुमार सिंह

मैत्रेयी पुष्पा और नारी अस्मिता के प्रश्न 200
डॉ. ज्योति गौतम

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में वैयक्तिक-प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप 203
चेवाराम यदु/डॉ. आर.के. पाण्डेय

केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका में प्रतिचित्रण का विवेचनात्मक अध्ययन 205
कृपा शंकर

भारत-अफ़ग़ानिस्तान सम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन 207
डॉ. पुष्कर पांडे

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में 'माँ' के रूप में नारी : एक दृष्टि 210
डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

'त्यागपत्र' उपन्यास में सामाजिक रुढ़ियाँ और नारी 213
डॉ. चन्द्रशेखर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा 215
डॉ. लाजो पाण्डेय

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धों के परिवर्तित होते आयाम : एक समीक्षा 217
डॉ. नलिनी लता सचान

डा. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर और बुद्धिज्म: नवयान 220
राजीव कुमार पाण्डेय

धर्म की पुनर्व्याख्या करता मधु कांकरिया का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' 223
डॉ. कामना पण्ड्या

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा का प्रभाव 225
डॉ. सरोज राय

प्रतापगढ़ जनपद में कृषिगत विविधता एवं इसके विकास में जल संसाधन की भूमिका 227
कौशलेन्द्र सिंह

भारत में राज्य राजनीति के निर्धारक तत्व 229
डॉ. उपेन्द्र कुमार सिंह

राज्यों की स्वायत्तता के सम्बन्ध में विभिन्न राजनैतिक दलों की मांग 231
डॉ. शैलेन्द्र नाथ सिंह

भारत में संघवाद के प्रति राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण 233
डॉ. राजेश कुमार सिंह

ग्लोबल गाँव के देवता : असुर जनजातीय विरासत पर भूमण्डलीकरण का दुष्प्रभाव 236
संजय कुमार सिंह

आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 238
रेनू देवी

उदय प्रकाश के साहित्य में युगबोध के भाव एवं कलात्मक आयाम 241
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता

किशोरवय विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास : ईश्वरीय ज्ञान (मुरली) के सन्दर्भ में 243
रोशनी चन्द्राकर/डॉ.शोभा श्रीवास्तव

नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में जीवन मूल्य 245
डॉ. सन्जू

मुर्दहिया और मणिकर्णिका में बौद्ध चेतना के स्वर 247
डॉ. रणजीत कुमार

समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज : महाभोज 249
स्नेहा शर्मा

रीति कालीन कवि केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका की प्रासंगिकता 251
सुरेश चन्द्र पाल

उग्र की कहानियों में युगीन चेतना 253
डॉ. परषोतम कुमार

परदेशी राम वर्मा के 'सूतक' उपन्यास में सामाजिक जागृति 255
कमल कुमार बोदले/डॉ. अभिनेश सुराना

आधुनिक हिंदी हास्य-व्यंग्य के पुरोधा राधाकृष्ण 257
प्रमोद कुमार

लोक साहित्य : सम्यक् विश्लेषण 260
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता

'विघटन' उपन्यास में चित्रित प्रमुख नारी पात्रों की संवेदना 263
मारुती दत्तात्रय नायकू

जनसंचार माध्यम में हिंदी भाषा का योगदान 266
प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे

सुषमा मुनींद्र की कहानियों में अभिव्यक्त अध्यापक वर्ग का चरित्रांकन 268
कु. अलका ज्ञानेश्वर घोडके

विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर 271
डॉ. उत्तम थोरात

हिंदी कहानी में स्त्री चेतना के विविध संदर्भ 273
श्रीमती सरला माधव त्रिपाठी

स्त्रीपरक लोकनाट्य 'नकटौरा' में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता के स्वर 275
डॉ. सरस्वती मिश्र

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन 278
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज 280
डॉ. ओम प्रकाश सैनी

जयनंदन की रचनाओं में मजदूर 283
डॉ. गोपाल प्रसाद

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका 285
डॉ. सुनील कुमार

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिकता: ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में 288
शेख उस्मान सत्तारमियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति में संगीत शिक्षा और संभावनाएं 291
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सूर्य : रामधारी सिंह 'दिनकर' 294
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम 297
डॉ. रमेश यादव

भारत में महिला उद्यमिता व चुनौतियां 299
डा. सुनीता

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 302
आशुतोष कुमार दूबे / डॉ. (श्रीमती) मधुबाला राय

प्रधानमंत्री जन-धन योजना और उत्तर प्रदेश में वित्तीय समावेशन की चुनौतियों का अध्ययन 304
डॉ. जय शंकर शुक्ल

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के अभाव के कारण 308
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

विकलांग-विमर्श : दशा और दिशा का मनोवैज्ञानिक अवलोकन (पुस्तक समीक्षा) 310
डॉ सीमा रानी / डॉ मीना पाण्डेय

स्वंय प्रकाश के कथा साहित्य में मार्क्सवाद का प्रभाव 315
स्मिता भारती

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और माखनलाल चतुर्वेदी 317
डॉ. संजय कुमार मिश्र

हिन्दी शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य 319
अजय कुमार

राजनीति, राजनेता और नागार्जुन 321
अमृता रानी

बाल कहानियों की प्रासंगिकता 323
डॉ. अंजु रानी

'एलिस एक्का की कहानियाँ और आदिवासी स्त्री' 325
मो. आज़म शेख

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकत्ता 327
चन्द्रकला मीना / डॉ. प्रदीप कुमार मीना

'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन 330
दीन दयाल सैनी

भारत में राष्ट्रीय एकीकरण एवं आन्तरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ 333
डॉ. दीपक कुमार अवस्थी / डॉ. मृदुला शर्मा

प्रेमचन्द की कथा दृष्टि शिवप्रसाद सिंह 336
डॉ. अजीत सिंह

साहित्य और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'बांझ घाटी' 338
डॉ. अमित सिंह

'राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी फिल्मों की भूमिका' 340
डॉ. ममता

विश्व राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं समाधान 343
डॉ. मनीष

नई शिक्षा नीति की अवधारणा और चुनौतियाँ 346
डॉ. नंदन कुमार भारती

कल्पना पत्रिका में विदेशी साहित्य 349
डॉ. निकिता जैन

अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित पात्रों का कथा में महत्त्व- 352
डॉ. रानी बाला गौड़ / गरिमा वर्मा

पाकिस्तान की माँग और भारत विभाजन का एक ऐतिहासिक अवलोकन 354
डॉ. प्रशांत कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समग्र आलोचनात्मक अवलोकन 356
जाहनवी देव

शिक्षातंत्र का बदलता स्वरूप; वैदिक शिक्षा प्रणाली से आरटीई की ओर 358
कनक प्रिया

निबलेट की डायरी:अंग्रेजी प्रशासक की दृष्टि में भारत छोड़ो आन्दोलन 361
डॉ. कुलभूषण मौर्य

देशज आधुनिकता बोध के कवि त्रिलोचन 364
माधवम सिंह

'देहान्तर' नाटक की मूल संवेदना 367
ममता यादव

अस्तित्व को तलाशती शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' 369
मनीष कुमार

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज 371
नगीना मेहरा

आदिवासी साहित्य में राजनैतिक चेतना के स्वर 373
निर्मला मीना/डॉ. अशोक कुमार मीना
नारी का अन्तः संघर्ष और महादेवी वर्मा 375
पूनम शर्मा/डॉ. अरूण बाला
बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाने के विभिन्न आयाम का एक अध्ययन 377
प्रो. (डॉ.) महबूब आलम
इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता के काव्य-प्रतिमान 380
प्रो. रसाल सिंह/प्रभाकर कुमार
भारत में न्यायिक सक्रियता एवं जनहितवाद के वर्तमान स्वरूप की विवेचना 383
डॉ. राजेश कुमार शर्मा/डॉ. संगीता शर्मा
उपलब्ध प्रारूपों से परे सामाजिक सिद्धांतः एक विमर्श 386
संदीप कुमार
राष्ट्रोन्नयन की वैदिक संकल्पना 389
संगीता अग्रवाल
औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव और आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास 391
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय
19 वीं सदी का आंदोलन और हिन्दी कहानी 394
डॉ. सविता डहेरिया
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श 396
डॉ. उमेश चन्द्र
'वैश्वीकरण और मीडिया' 399
सोनू रजक
प्रेमचन्द की कहानियों में हाशिए का समाज : स्त्री संदर्भ 402
सुनीता जाट
ऋतुराज के काव्य में युवा मानसिकता का सामाजिक संदर्भ 404
सुरेश कुमार वर्मा
नीति-निर्माण एंव नीति को क्रियान्वयन करने में नौकरशाही की भूमिका एक समीक्षा 406
सूर्य प्रकाश/प्रो. (डॉ. विनय सोरेन)
भक्ति साहित्य के अन्य प्रश्न और देवीशंकर अवस्थी 409
विजय कुमार गुप्ता
भारत की आजादी में दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित संपादकीय का अध्ययन 412
बिमलेश कुमार
प्रेमचंद का दलित दस्तक 414
डॉ. जियाउर रहमान जाफरी
आयुर्वेद-शिक्षणःऔपनिवेशिक संयुक्त प्रांत (1900ई.-1941ई.) 416
पूजा/डॉ. सतीश चंद्र सिंह
छत्तीसगढ़ राज्य में कोर-पीडीएस के प्रभाव का एक प्रशासनिक अध्ययन (धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में) 419
डॉ. श्रीमती रीना मजूमदार/डॉ. प्रमोद यादव/बिसनाथ कुमार
नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार 424
निलिशा सिंह
राष्ट्रीय आंदोलन के गांधीवादी चरण में महिलाओं की भूमिका 427
डॉ. चन्दन कुमार
बुद्धकालीन विदेह एवं अंगुत्तराप की भूमि पर पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म की उपस्थिति एवं उसका स्वरूप : एक पुरातात्त्विक अवलोकन 430
डॉ. अमिय कृष्ण
''नारी मुक्ति का स्वर मुखरित करती आत्मकथाएं'' (विशेष-सन्दर्भ, एक कहानी यह भी, अन्या से अनन्या) 433
लक्ष्मी गोंड
दार्शनिक चिंतन के आधार पर बहुआयामी व्यक्तित्व रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन 436
डॉ. नीलम श्रीवास्तव
कठोपनिषद के आधार पर नचिकेता का चरित्र चित्रण 439
डॉ. मधु कुमारी
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रादुर्भाव में तात्कालीन संस्थाओं का योगदान : एक विमर्श 441
प्रिया कुमारी/डॉ. अंजना पाठक
ऑनलाइन शिक्षा : एक समालोचनात्मक अध्ययन 443
डॉ. अश्वनी
संत दादूदयाल का 'माया' विषयक चिंतन 446
सुनील कुमार
आदिवासी समाज और विज्ञान एवं तकनीकी 449
कविता वर्मा/अनुज
मैथिलीशरण गुप्त की कविता में अभिव्यक्त भाव-बोध एवं भाषिक चेतना का मूल्यांकन 452
डॉ संजय वर्मा
बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं इतिहासःचन्देल वंश के विशेष संदर्भ में 456
डॉ अरविन्द सिंह गौर
आधी आबादी के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ : वाया मीडिया 460
अर्चना यादव, डॉ. जयपाल मेहरा
भारत की विदेश नीति : सुषमा स्वराज के विशेष सन्दर्भ में ऋतु 463
ऋतु/डॉ. उर्मिला
भारत में कोविड-19 के मध्य प्रवास और विपरीत प्रवासनः समस्याएं और चुनौतियां 466
अरुणा परचा
प्रो. मैनेजर पाण्डेय की साहित्य और साहित्येतिहास दृष्टि! 471
लक्ष्मण
भारत में पत्रकारों पर हमलेः पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की आजादी को खतरा 474
डॉ. परमवीर सिंह
आचार्य अभिनवगुप्त एवं रूपकों में शान्त रस 477
डॉ. सन्दीप कुमार/डॉ. चांदनी
अनुशासन विषयक तथ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन 480
–डॉ. सत्य नारायन (प्राचार्य)/विष्णु दत्त शर्मा

मुगल काल में जहाज निर्माण एक अध्ययन 488
–नीलम कुमारी

अफगानिस्तान की बदलती जियोपॉलिटिक्स और शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका 492
–प्रोफेसर श्याम मोहन अग्रवाल/डॉ. मोहन लाल जाखड़

आधुनिक राजस्थान में व्यापार एवं वाणिज्य के केन्द्रों का ऐतिहासक अध्ययन 495
–डॉ. राजेश कुमार मीना

राजस्थान के ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) का समावेषी एवं सतत विकास में योगदान : एक शोध परक अध्ययन 498
–संजू बुटोलिया एवं डॉ. गुलाब बाई मीना

''विकास और पर्यावरण का अधूरा सच मीडिया के परिप्रेक्ष्य में'' 503
–डॉ. पार्वती गोसाई

डायन-प्रथा के नाम पर झारखण्ड में महिलाओं की हत्या, उत्पीडन एवं डायन-हत्या पीड़ित परिवारों का मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन और न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता की अनुशंसा 506
–डॉ. अनीता रंजन

छत्तीसगढ़ राज्य के मुंगेली जिले में अनुसूचित जाति के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण 509
–नितेश कुमार साहू/डॉ. प्रमोद कुमार यादव

भारतीय समाज में बिहार के दलित महिलाओं की स्थिति 513
–श्वेता कुमारी

9 अगस्त ''अगस्त क्रान्ति दिवस'' को समर्पित ''राष्ट्र निर्माण और गांधी'' (1947 से 2020 तक) समसामयिक भारत के विशेष संदर्भ में 516
–डॉ. आनंद यादव

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में नारी मूल्यों का हनन 520
–डॉ॰ रीना डोगरा

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि के साहित्य में जनजातीय संवेदना 522
–ज्योति कुशवाहा/डॉ. अभिनेष सुराना

छत्तीसगढ़ की पारंपरिक लोकगीतों में सामाजिक परिदृश्य 525
–रीना गोटे

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान 529
–डॉ. संगीता उप्पे

''एकीकृत शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिरूचि का अध्ययन'' 531
–डॉ. विनोद कुमार जैन/मिस.रूबी शर्मा

''कोरोना काल मे दिव्यांजनो में स्वार स्वास्थ्यगत स्थिति का अध्ययन'' 536
–विजय मानिकपुरी/डॉ. के. एल. शुक्ला

संस्कृत-साहित्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति 539
–डॉ. रतीश चन्द्र झा

स्त्री विमर्श के आईने में 21वीं सदी की हिन्दी कहानियाँ 542
–डॉ अनीता यादव

दाम्पत्य शोषण के विरुद्ध आथ्मचेतस स्त्री-कोमल कर्फ्यू नाटक के विशेष संदर्भ में। 545
–कोमल गांधार

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षाक्रम का अनुशीलन 548
–अमित कुमार दूबे

अंग्रेजी कवि भौली के काव्य में प्रेम भावना तथा सौन्दर्य चेतना 551
–डॉ. राखी उपाध्याय

राम कथा में स्त्री, दलित एवं आदिवासी चेतना 554
–रागिनी मिश्रा

जैनेन्द्र कुमार के निबंधों में व्यक्ति और समाज 556
–डॉ. रोहित कुमार

वर्तमान काल का साहित्य और मीडिया निर्मित संवेदना 559
–डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का लिंग एवं अधिवास के सन्दर्भ में अध्ययन 562
–देवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. रीता सिंह

प्राथमिक शिक्षकों के अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन 565
–राघवेन्द्र वीर सिंह/डॉ. अखिलेश चन्द

स्नातक स्तर के कला एवं शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं संवेगात्मक समायोजन अध्ययन का तुलनात्मक 568
–डॉ. डी.पी. मिश्र/'रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी

''भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास'' 571
–रीना कुमारी

महादेवी वर्मा रूकाव्य व्यक्तित्व का विकास 574
–डॉ. ममता

ब्रिटिश राज में हिन्दी पत्रकारिता 578
–डॉ. विवेक कुमार जायसवाल

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन 585
–डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

वेब सीरीज़ की सामाग्री का युवाओं पर प्रभाव का अध्ययन 588
–अनुज

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में राजनीतिक संचार के आभासी माध्यमों का प्रादुर्भाव (प्रमुख राजनीतिक दलों और नेताओं का तुलनात्मक अध्ययन) 591
–स्नेहाशीष वर्धन

दैनिक जागरण समाचारपत्र में भारतीय प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा का कवरेज: एक अध्ययन 595
–डॉ. निरंजन कुमार

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन

डॉ. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

आब्सट्रैक्ट

मीडिया और विज्ञापनों का महत्व अनादि काल से चलता चला आ रहा है। भारतीय जनतंत्र भी इससे अछूता नहीं है। भारत की जनकल्याणकारी सरकारों ने इसी महत्व को अंगीकार करते हुए स्वतंत्र मीडिया को फलने फूलने का मौका दी हैं। भारतीय संविधान में भी इसके लिए विशिष्ट भाव देखा गया। सरकारों ने मीडिया के सहयोग से अपने जनहित कार्यक्रमों और विज्ञापनों को आम जनमानस में प्रस्तुत करती रहीं हैं। अब तक सभी सरकारों ने मीडिया के महत्व को समझा है और उसे आगे बढ़ाने का कार्य किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मीडिया और सरकार के बीच रिश्तों और उससे होने वाले प्रभावों पर कंटेट एनालिसिस किया गया है।

की वर्डः लोकतंत्र, सरकार, चुनाव, मतदान, जनकल्याणकारी कार्यक्रम, विज्ञापन

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी यह है कि उसमें आम जनता द्वारा चुनी गई सरकार होती है। कोई भी लोकतांत्रिक सरकार तभी तक स्थिर रह सकती है, जब तक कि उसमें आम जनता का विश्वास कायम रहता है। भारत में आजादी के बाद आपातकाल के छोटे से दौर को दे तो लोकतंत्र के प्रति लोगों का आकर्षण बना हुआ है। आम आदमी का लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास बरकरार है। इस कार्य में मीडिया की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। मीडिया ने लोकतांत्रिक आस्था के लिए आम जनमानस और सरकारों के बीच एक सेतु का कार्य किया है। इसी कारण उसे लोकतांत्रिक भारत में चौथे खम्भे का तमगा मिला हुआ है।

मीडिया में मुख्य रूप से समाचार, विचार और विज्ञापनों का प्रकाशन और प्रसारण होता है। इसमें भी विज्ञापन किसी भी मीडिया समूह के लिए वह ईधन है, जिसके द्वारा उसके सतत् चलते रहने की गारंटी होती है। स्वतंत्र भारत में जहां स्वतंत्र प्रेस के लिए मुक्त अवसर मुहैया कराना सरकार की मुख्य प्राथमिकता थी, वहीं खुद के कल्याणकारी भूमिका को जनता के सामने लाने की चुनौती भी थी। विज्ञापन ने दोनों ही चुनौतियों को आसान करने का कार्य किया। इस बारे में प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का कथन काबिलेगौर है कि मीडिया आधुनिक समय में लोकतंत्र के लिए सबसे सशक्त माध्यम है। मै एक शक्तिशाली प्रेस की कद्र करता हूं। नेहरू जी ने अपनी इसी अवधारणा के चलते प्रथम प्रेस आयोग का गठन कर स्वतंत्र व निष्पक्ष प्रेस के लिए रोडमैप तैयार करने की आधारशिला रखी थी।

प्रेस की महत्ता को देखते हुए भारत सरकार ने स्वतंत्र मीडिया के साथ–साथ सरकारी मीडिया के मजबूत संगठन की नींव रखी है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय मीडिया के क्रियाकलाप व उनके हितों के लिए निरंतर सरकार की तरफ से काम करता रहता है। सरकारी मीडिया संगठन के अंतर्गत 14 इकाइयां और तीन पंजीकृत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम तथा तीन पंजीकृ त स्वायत्त संस्थाएं हैं। 14 इकाइयों में आकाशवाणी, दूरदर्शन, प्रेस सूचना कार्यालय, फिल्म्स डिवीजन, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, प्रकाशन विभाग, संगीत तथा नाटक प्रभाग, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, फोटो डिवीजन, संदर्भ एवं अनुसंधान निदेशालय, रजिस्ट्रार न्यूजपेपर ऑफ इण्डिया, फिल्म सेन्ट्रल बोर्ड, फिल्मोत्सव निदेशालय, भारतीय फिल्मों का राष्ट्रीय संग्रहालय है। इसके अलावा मंत्रालय के अधीन तीन सार्वजनिक उपक्रम भारतीय चलचित्र निर्यात निगम, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, फिल्म वित्त निगम है। भारतीय जनसंचार संस्थान, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान व चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से पंजीकृत संस्थाएं है। उपरोक्त के नाम से ही उनके क्रियाकलाप व कार्यक्षेत्र स्पष्ट है। हालांकि इनमें प्रमुख रूप से कुछ विभाग अति महत्वपूर्ण है, जिन्हें हम तीन अनुभाग में बांट सकते हैं–प्रेस अनुभाग, प्रचार अनुभाग और क्षेत्रीय अनुभाग। प्रेस अनुभाग प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से संपर्क में रहता है और उन्हें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हेतु रिलीज व विज्ञापन जारी करता रहता है। इसके लिए प्रेस सूचना ब्यूरो और विज्ञापन एवं दृश्य–प्रचार निदेशालय मुख्य रूप से अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रचार व क्षेत्रीय अनुभाग भी निजी व सरकारी जनसंचार माध्यमों के जरिये विभिन्न जनोपयोगी योजनओं व सूचनाओं का विज्ञापन करते रहते हैं।

जहां तक विज्ञापन की बात है तो भारत में राजकीय अथवा शासकीय विज्ञापन केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों तथा उनके विभिन्न मंत्रालयों द्वारा जारी सूचना, ज्ञान, योजनाएं, दिशा–निर्देश, उपलब्धियों, जनकल्याण नीतियों, शिक्षा, तकनीक आदि से संबंधित होता है। 15 अगस्त, 26 जनवरी व महापुरूषों के जन्म दिवस पर राजकीय विज्ञापन, जनता की भावनाओं को देखतें हुए प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से जारी किए जाते हैं। ब्राइस के अनुसार– जनतंत्र में शासन व्यवस्था पर एकाधिकार जनता के पास सुरक्षित है। अरस्तू ने भी

कहा था– शासकों को जनता से निरंतर संपर्क व संवाद बनाये रखना चाहिए। लोकतंत्र में सरकारों के लिए यह विचार विज्ञापनों द्वारा सफलीभूत करता है। इस तरह से देखा जाये तो देश में सरकार अपने क्रियाकलापों के बारे में जागरूकता और जनमत बनाने का कार्य मीडिया और विज्ञापनों के माध्यम से करती रहती है। सरकार लोकतंत्र में मीडिया के सहयोग और विज्ञापनों के माध्यम से अपनी योजनाओं को जनता में लोकप्रिय बनाने का निरंतर उपक्रम करती है। सरकार इसके साथ ही जनता से जुड़ाव व लोकतंत्र के मूल उद्देश्य को भी जिन्दा रखने के प्रयास को प्राणवायु प्रदान करती रहती है। सरकारें जनहित के विज्ञापनों के जरिये आम आदमी के लिए समय–समय पर जागरूकता विज्ञापन भी जारी करती रहती हैं। जैसे साक्षरता, स्वच्छता, पर्यावरण, परिवार कल्याण, बाल कल्याण, टीकाकरण, प्रौढ़ शिक्षा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, नशा उन्मूलन, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, एड्स जागरूकता, विकलांग उद्धार, कैंसर एवं कुष्ठ रोगियों की सहायता, रक्तदान, नेत्रदान, कर–भुगतान आदि सामाजिक मुद्दे प्रमुख है।

भारत में लोकतंत्र है, इसलिए सरकार की तरफ से जारी किए जाने वाले विज्ञापन सशुल्क होते हैं। इसी कारण भारत सरकार प्रति वर्ष करोड़ों रूपये का विज्ञापन निजी व सरकारी माध्यमों के जरिये जारी करती है। कभी–कभी इस मामले में सरकारें अपनी वाह–वाही दिखाने के चक्कर में विज्ञापन मद में काफी अधिक पैसे खर्च कर देती हैं। इस संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के हालिया दिशा–निर्देश में भी जिक्र मिलता है। अदालत ने कहा कि सरकारी विज्ञापनों की सामग्री नागरिकों एवं उनके अधिकारों के साथ–साथ सरकार के संवैधानिक और कानूनी दायित्वों के लिये भी प्रासंगिक होनी चाहिये। विज्ञापन सामग्री को अभियान के उद्देश्यों को पूरा करने तथा लागत प्रभावी तरीके से अधिकतम पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से डिजाइन किया जाना चाहिये। विज्ञापन सामग्री सही होनी चाहिये तथा इसके द्वारा पहले से मौजूद नीतियों और उत्पादों को नए ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिये।

मीडिया में जागरूकता सामग्रियों और विज्ञापनों की प्रभावशीलता इस बात से आंकी जा सकती है कि पिछले कुछ चुनावों में निर्वाचन आयोग ने मीडिया के माध्यम से मतदान के प्रेरित करने वाले कार्यक्रम और विज्ञापन प्रदर्शित कराये। विज्ञापनों के माध्यम से भारत निर्वाचन आयोग ने आम मतदाताओं को मतदान के प्रेरित किया ही, राजनीतिक दलों ने भी आम जनता को उन्हें उनके मतों का मूल्य समझाने का प्रयास किया। पिछले दो दशक में जब लोगों के बीच यह चर्चा जोरों से उभरकर आने लगी कि आम मतदाता का लोकतंत्र और राजनीति से मोहभंग हो रहा है परंतु 2012 के बाद से होने वाले चुनावों में मतदान प्रतिशत में होने वाली वृद्धि ने इन चर्चाओं को विराम लगा दिया। यह लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए संतोष और सुकून देने के लिए काफी है। यह कमाल भारत व राज्य निर्वाचन आयोगों द्वारा आम आदमी के लिए जनहित में विज्ञापन जारी कर मतदान के प्रति निरंतर जागरूक करने का रहा। इस कार्य में राजनीतिक दलों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य किया। कुछ लोकप्रिय राजनेताओं ने यहां तक कहा कि वोट चाहे जिसको भी दिया जाये, लेकिन वोट जरूर दिया जाये। इस संकल्प ने मीडिया और उनमें जनहित में जारी विज्ञापनों के माध्यम से लोकतंत्र को संजीवनी व मजबूती देने का कार्य बखूबी किया है।

इस प्रभाव भी उत्तरोत्तर चुनावों में जनादेश में हाने वाली वृद्धि में देखा जा सकता है। देश के किसी भी संसदीय चुनाव के मुकाबले 2019 के लोकसभा चुनावों में सबसे अधिक मतदान दर्ज किया गया। इसमें कुल 91 करोड़ मतदाताओं में से तकरीबन 67.11 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाला। 2014 में कुल मतदान 66.40 प्रतिशत दर्ज किया गया था।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2012 के सभी सातों चरणों में रिकार्ड मतदान सुनिश्चित हो सका। लखनऊ क्षेत्र में 2007 के विधानसभा चुनाव में जहां मत प्रतिशत 36 था, वहीं 2012 में यह प्रतिशत 57 तक पहुंच गया। 2017 के चुनाव में यह दर बढ़कर 60 प्रतिशत पहुंच गया। एक अनुमान के मुताबिक यानि 20 प्रतिशत का उछाल आया। इस बार भी राज्य में 2022 के विधानसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर चुनाव मशीनरी खासी मशक्कत करेगी। अब तक राज्य में विधानसभा चुनाव का मतदान प्रतिशत 60 के आसपास रहा है, जिसे इस बार बढ़ाकर 70 से 75 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य तय किया गया है। इस अभियान में मीडिया के साथ–साथ आशा बहुएं, एनएएम, शिक्षा मित्र, पंचायत अधिकारी, शिक्षक आदि भी लगाये जाएंगे। अर्थात मतदाताओं में एकाएक यह परिवर्तन चमत्कार नहीं हो सकता। इसके लिए निर्वाचन आयोग और राजनीतिक दलों का संयुक्त प्रयास को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। निर्वाचन आयोग जहां 'क्या आप मतदान के लिए तैयार हैं' शीर्षक से अपने विज्ञापन में तिथिवार विवरण और मतदाता के अधिकार और कर्तव्य व जिम्मेदारी के प्रति आगाह करने वाला विज्ञापन दे रहा था, वहीं एक राजनीतिक पार्टी 'एक वोट' शीर्षक से अपने विज्ञापन जारी कर रही थी। पार्टी इस विज्ञापन के जरिए अपने सुशासन के दावे को तो विज्ञापित करती ही थी, आम मतदाता के एक वोट की कीमत को भी बताने का प्रयत्न कर रही थी। 19 फरवरी 2012 के अमर उजाला लखनऊ संस्करण में गोल्डी मसाले द्वारा प्रथम पृष्ठ पर दिया गया विज्ञापन भी उल्लेखनीय है, जिसमें अपने मसाले के प्रचार के साथ पहला शीर्षक ही 'मतदान अवश्य करें' मतदान के लिए जागरूक करने के लिए अहम भूमिका निभाने वाले माने जा सकते हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि जनहित में जारी किए जाने वाले विज्ञापन लोकतंत्र के लिए संजीवनी की भूमिका निभाने का कार्य करते हैं।

यूं तो निर्वाचन आयोग का गठन 26 जनवरी 1950 को देश के संवैधानिक ढांचा का जामा पहनाने से ठीक एक दिन पहले ही आयोग का गठन हो गया था, लेकिन 2012 में पहली बार मतदाता दिवस के विज्ञापनों ने मतदान की प्रासंगिकता को बढ़ाने का कार्य किये। इससे पूर्व में होने वाले आम चुनाव रस्मी तौर पर करा लिए जाते थे। नतीजतन मत प्रतिशत घटते गए। वैसे चुनाव आयोग लंबे समय से कोशिश में लगा था कि किस तरह जनता को बड़े पैमाने पर मतदान केन्द्रों तक खीचा जा सके। उसकी पहली कोशिश वर्ष 1975 में हुई थी। दोबारा केन्द्र की संयुक्त मोर्चा सरकार ने 31 जुलाई 1996 को दिनेश गोस्वामी की अध्यक्षता में कमेटी की सिफारिशों को लागू किया था। फिर भी तमाम प्रयासों के बावजूद 40 प्रतिशत मतदान से आगे बढ़

पाना मुश्किल होता था। यह आयोग के साथ–साथ भारतीय लोकतंत्र के लिए भी चिंता की बात थी। इसके लिए मतदाताओं को जागरूक किया जाना अति आवश्यक था और इसके लिए विज्ञापनों का सहारा लेना आयोग व राजनीतिक दलों व अन्य व्यापारिक संस्थाओं के लिए काफी फायदेमंद साबित हुआ।

यह बात केवल मतदान के लिए ही नहीं लागू होती है, बल्कि हर उस क्षेत्र में लागू होती है, जहां से लोकतांत्रिक ढंग से शासन–प्रशासन का संचालन हो सकता है। बात चाहे सूचना के अधिकार का हो या मनरेगा का। जनकल्याण व राष्ट्रहित से जुड़े हर मोड़ पर आम आदमी हमेशा सजग दिखा। यह कमाल था सरकार द्वारा विभिन्न मीडिया के माध्यम से जनहित से जुड़े मुद्दों व योजनाओं का समय समय पर किए जाने वाले विज्ञापनों का। विभिन्न संस्थाएं जो कि आम जनता से जुड़ी होती है, वे उनका विश्वास अर्जन के लिए विभिन्न जनहित के विज्ञापन जारी करती रहती है। इन विज्ञापनों में किसी वस्तु या सेवा से इतर संस्था की प्रतिष्ठा व छवि निर्माण में वृद्धि के लिए विषयवस्तु तैयार किये जाते हैं। अपने उद्देश्य, लक्ष्य मिशन व सेवा योजना की जानकारी देकर संस्थाएं अपनी साख की स्थापना, राष्ट्रीय व सामाजिक दायित्व का निर्वहन करती है। संस्थाएं राष्ट्रीय सामाजिक दायित्वों की पूर्ति हेतु अपनी कार्य गतिबिधि व उपलब्धियों का विज्ञापन प्रचारित करती हैं। इनका उद्देश्य लाभ अर्जन नहीं होता। ऐसे विज्ञापन लोक सेवा से जुड़े हुए होते हैं। इस प्रकार के विज्ञापनों के बारे में एच0 फ्रेजर मूरे का मत है कि संगठन के प्रबंधक वर्ग एवं जनसंपर्क प्रबंधन के मध्य बेहतर सामंजस्य द्वारा तैयार ऐसे विज्ञापन अपने उद्देश्य व प्रभाव में सफल होते हैं। इस तरह से हर वह व्यवस्था जहां लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनायी जाती है, वहां जनहित में जारी विज्ञापनों का अहम रोल होता है।

परिणामतः जनहित में जारी विज्ञापनों की प्रकृति व उनके प्रयोग व प्रभाव के मद्देनजर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ये विज्ञापन लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए संजीवनी का कार्य करते हैं। कोई भी सरकार जो कि लोकतांत्रिक तरीके से चुनी जाती है, उनके क्रियाकलापों में बेहतरी के लिए जनहित में जारी विज्ञापन महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य करते हैं। आम आदमी के मतदान के अधिकार और अपनी सरकार के प्रति विश्वास बहाली के लिए आज के सूचना तकनीक के इस युग में विज्ञापन ही अहम वाहक होते हैं। जनहित में जारी होने वाले विज्ञापनों ने यदि आम आदमी और सरकार के बीच एक सेतु का कार्य न किया होता तो आज भारत एक समृद्ध लोकतांत्रिक देश की कतार में न खड़ा दिखता।

संदर्भः–

1. तिवारी, डॉ. अर्जुन, जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005, पृ. 120
2. राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2004, पृ. 19
3. राधेश्याम शर्मा, जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2004, पृ. 13
4. मालवीय, कृष्ण कुमार, आधुनिक विज्ञापन, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2007, पृ. 48
5. मालवीय, कृष्ण कुमार, आधुनिक विज्ञापन, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2007, पृ. 50
6. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/regulation-of-government-advertising-ccrga
7. https://www.livehindustan.com/lok-sabha-election/story-lok-sabha-elections-2019-record-67-percent-voting-in-all-phases-2539941.html
8. https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/story-up-assembly-poll-2022-latest-news-this-time-voting-percentage-will-be-from-70-to-75-election-machinery-make-special-plan-for-this-4456290.html
9. अमर उजाला, लखनऊ संस्करण, 19 फरवरी, 2012, पृ. 01, 03, 05
10. http://pmtripathi.blogspot.in/2012/02/blog-post.html
11. मालवीय, कृष्ण कुमार, आधुनिक विज्ञापन, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2007, पृ. 44–45

असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
आईआईएमटी कालेज, ग्रेटर नोयडा